DOI: 10.51220/hjssh.v8i1.9

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 8 pp.67 -78, December, 2013, ISSN. 0975 - 9891

हिमालय की आर्थिक-व्यावसायिक संरचना पर परिवहन एवं संचार माध्यमों का प्रभाव (गढ़वाल हिमालय के चमोली एवं रूद्रप्रयाग जनपद के सन्दर्भ में)

बी0सी0एस0 नेगी[1] एवं बी0एल0 तेली[2]

[1]भूगोल विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोपेश्वर चमोली (उत्तराखण्ड)

[2]भूगोल विभाग, हेमवन्ती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय पौड़ी गढ़वाल 246001

Received: 16-12-2013 **Revised: 26-12-2013** **Accepted: 30-12-2013**

ABSTRACT

आर्थिक व व्यावसायिक संरचना का तात्पर्य किसी क्षेत्र में विभिन्न आर्थिक कार्यों में संग्लन जनसंख्या से है। किसी भी क्षेत्र के आर्थिक स्वरूप का अध्ययन उस के विभिन्न आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं के स्पष्टीकरण में सहायक होता है। जिससे सामाजिक आर्थिक विकास में मूलभूत सहायता मिलती है। इस लिये किसी क्षेत्र में कार्यरत जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना और उस के कालिक परिवर्तनशील प्रवृत्ति का भौगोलिक अध्ययन भौतिक सामाजिक व्यवसायिक आर्थिक संरचना में हुये परिवर्तन को समझने में सहायता प्रदान कर सकता है मानवीय विज्ञानों में सामाजिक आर्थिक विकास के माप दण्ड के रूप में व्यवसायिक संरचना के अध्ययन को प्रयोग में लाया जाता है।

KEY WORDS-हिमालय,आर्थिक-व्यावसायिक संरचना, परिवहन एवं संचार माध्यमों का प्रभाव

प्रस्तावना

भारत विश्व का द्वितीय विशालतम देश है। यहाँ पर मुख्य रूप से कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है। भारत में 80 प्रतिशत जनसंख्या व्यवसायिक रूप से कृषि कार्यों पर संलग्न है। कास्तकार तथा खेतीहर मजदूर दोनों को मिलाकर 65.5 प्रतिशत की सहभागिता सुनिश्चित करते है। चमोली एवं रूदप्रयाग जनपदों की ग्रामीण जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना क्रमशः कृषक 78773, कृषि श्रमिक 492, कुटीर उद्योग 2334, अन्य कर्मकार 201, कुल मुख्य कर्मकार 96900, सीमांत कर्मकार 67829, कुल कर्मकार 164729, व कृषक 55453, कृषि श्रमिक 219, कुटीर उद्योगों में 841 अन्य कर्मकार 19555, कुल मुख्य कर्मकार 76068, सीमांत कर्मकार 25965, कुल कर्मकार 102033, के रूप में है। (गढ़वाल मण्डल पौड़ी सांख्यिकी पत्रिका 2011 के अनुसार) भारत, उत्तराखण्ड तथा हिमालयीय प्रदेशों की ग्रामीण जनसंख्या के व्यवसायिक स्वरूप से तुलनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट हो जाता है कि सम्पूर्ण हिमालयी क्षेत्रों के अनुरूप ही यहाँ की व्यवसायिक संरचना सर्वाधिक एकल पक्षीय (Monofunctional) हैं। गढ़वाल हिमालय का चमोली एवं रुद्रप्रयाग जनपद आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा क्षेत्र है। राज्य तथा क्षेत्र के पर्वतीय भागों की विषम भौगोलिकता यहाँ के निवासियों

©SHARAD

के लिए रोजगार हेतु सीमित विविधता वाले अवसर प्रदान कर पाती है। क्षेत्र यद्यपि प्राकृतिक संसाधानों की दृष्टि से पर्याप्त सम्पन्न है फिर भी आश्चर्यजनक तथ्य है कि राज्य में आर्थिक पिछड़ेपन के साथ-साथ रोजगार के अवसर अत्यन्त सीमित हैं।

क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधानों के दोहन की वर्तमान स्थिति क्षेत्र की जनसंख्या के भरण-पोषण में पूर्णत: अक्षम सिद्ध हो रही है। जिसके परिणामस्वरुप गढ़वाल के पर्वतीय भागों में ग्रामीण जनसंख्या का रोजगार हेतु बड़ी संख्या में देश के अन्य भागों की ओर पलायन हो रहा हैं इन्ही प्रवासी लोगों द्वारा कमाकर भेजे गये धन से गढ़वाल की आधी से अधिक जनसंख्या की जीविका चलती है। इस प्रकार गढ़वाल हिमालय की लगभग आधी अर्थव्यवस्था इसी धनादेश प्रणाली (Money Order Economy) द्वारा संचालित होती है।

भौगोलिक परिचय

प्रस्तुत शोध विषय का अध्ययन क्षेत्र गढ़वाल हिमालय के चमोली व रुद्रप्रयाग जनपद है, जो वर्ष 1996 से पूर्व एक ही थे। दोंनों जिले लगभग सम्पूर्ण अलकनन्दा बेसिन को समाहित किए हुए है। सम्पूर्ण अलकनन्दा बेसिन का 90 प्रतिशत भाग इन दोनों जनपदों के अर्न्तगत आता है। अलकनन्दा बेसिन का देवप्रयाग से खांकरा तक निचले बेसिन का छोटा सा क्षेत्रफल तथा बेसिन की एक अन्य प्रमुख नदी पिण्डर का उद्गम क्षेत्र ही इस जनपदों से बाहर पड़ता हैं। उत्तराखण्ड राज्य के गढ़वाल हिमालय का महत्वपूर्ण भाग पौराणिक साहित्य में केदारखण्ड नाम से उल्लिखित है, यह 16वीं शताब्दी के बाद गढ़वाल नाम से विख्यात हुआ है। उत्तराखण्ड के चार प्रमुख तीर्थ धामों में से प्रथम दो तीर्थ धाम (बदरीनाथ व केदारनाथ) इन्हीं जनपदों में क्रमश: चमोली व रुद्रप्रयाग में स्थित हैं। देश की तिब्बत,चीन से लगने वाली अन्तर्राष्ट्रीय सीमा का क्षेत्र होने के कारण इन दोनों जनपदों का क्षेत्र विशेष सामरिक महत्व का है।

इन दोनों जनपदों की संयुक्त स्थिति $29^0 5'37''$ उत्तरी अंक्षाश से $31^0\ 27''3'$ उत्तरी अक्षांश तक तथा $78^0\ 5''44'$ पूर्वी देशान्तर से $80^0\ 2''25''$ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। 9978 वर्ग किमी. क्षेत्रफल में फैले ये दोनों जनपद उत्तर से दक्षिण और अधिकतम लम्बाई 129 किमी0 तथा पूर्व से पश्चिम की ओर चौड़ाई 108 कि0मी0 में विस्तारित है। इस सम्पूर्ण क्षेत्र के उत्तर की ओर चीन अधिकृत तिब्बत स्वशासी क्षेत्र पूरब की ओर पिथौरागढ़ एवं अल्मोड़ा जनपद, पश्चिम की ओर उत्तरकाशी एंव टिहरी तथा दक्षिण की ओर जनपद पौडी़ गढ़वाल के क्षेत्र स्थित है। इन दोनों जनपदों में अलकन्नदा नदी अपनी प्रमुख सहायक नदियों एंव उनकी उपसहायक नदियों के साथ प्रवाहित होती हैं। दोनों जनपदों का सम्पूर्ण भाग पर्वतीय है तथा 500 मी0 (नन्दा देवी शिखर) के उच्चावच अन्तराल के अर्न्तगत विषम धरातलीय स्थिति वाला क्षेत्र है। यह सम्पूर्ण भाग लघु हिमालय तथा महान हिमालय क्षेत्र में फैला हैं। महान हिमालय क्षेत्र की विष्णुगंगा एवं धौलीगंगा घाटियों में स्थित माणा तथा नीति क्षेत्र के अन्तिम समीपवर्ती गांव है, तथा सम्पूर्ण क्षेत्र 3600 मी0 से ऊपर मानव निवास नहीं है, जबकि 3800 से 4200 मी0 के बीच हिमरेखा मिलती है। यह सम्पूर्ण क्षेत्र प्रशासनिक दृष्टि से दो जनपदों में बंटा है, जिसमें 9 तहसीलें 12 विकासखण्ड, नगरीय क्षेत्र तथा 1901 गांव सम्मिलित है। इसमें से 1804 गांव आबाद तथा 98 गैर आबाद है। ये दोनों जनपद गढ़वाल लोकसभा क्षेत्र का आधे से कुछ कम भाग का प्रतिनिधित्व करते है। राज्य की विधानसभा में दोनों जनपदों से 6 सदस्य जिसमें से 2 जनपद रुद्रप्रयाग तथा

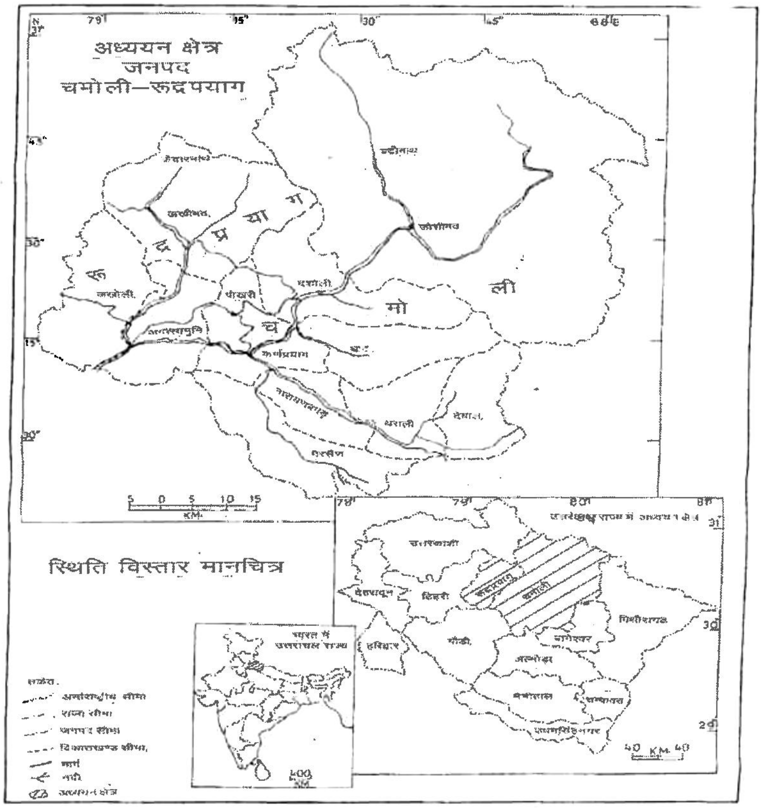

4 जनपद चमोली से निर्वाचित होते है। दोनों जनपदों में वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जसंख्या 627971 है जिसमें से पुरूष व महिला जनसंख्या क्रमश: 305319 व 322652 है। सन् 1962 के चीनी आक्रमण से पूर्व इस जनजाति के लोगों का मुख्य व्यवसाय व्यापार तथा पशुपालन था जो 1962 में चीनी-तिब्बत व्यापर में प्रतिबन्ध के कारण पशुपालन तक सीमित गया। अब ये लोग पशुपालन के अतिरिक्त लघु निर्माण कार्यो, स्थानीय व्यापार तृतीयक व्यवसायों तथा कृषि में संलग्न है। क्षेत्रीय अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर कहा जा सकता है कि परिवहन एवं संचार साधनों ने क्षेत्र की अर्थव्यवस्था व उसके स्वरूप को अत्यधिक प्रभावित किया है। यह प्रभाव सड़क मार्गो से जुड़े गॉवों की आर्थिकी से सम्बन्धित सूचनाओं से प्राप्त तथ्यों में पाये गये अन्तर से स्पष्ट है। यहाँ परिवहन एंव संचार साधनों की सुविधा के फलस्वरुप क्षेत्र में परिवर्तन निम्न रूपों में दिखाई देता है।

(1) परम्परागत व्यवसायिक ढॉचे में परिवर्तन–गढ़वाल हिमालय के शेष भागों की तरह जनपद चमोली एंव रुद्रप्रयाग में परम्परागत वर्ग व्यवसाय आधारित अर्थव्यवस्था, परिवहन एंव संचार माध्यमों के निरन्तर विकास के परिणामस्वरुप वे आधुनिकीकरण के प्रभाव निरन्तर परिवर्तित होती जा रही हैं। प्रारम्भ में यहाँ ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा शूद्र तीनों ही वर्ण अपनी-अपनी जाति व्यवस्था पर आधारित व्यवसायों में संलग्न थे। उच्च हिमालय क्षेत्रों की पशुपालन अर्थव्यवस्था पूर्णत: क्षत्रिय वर्ग के हाथ में ही रही है, जबकि सभी वर्ग कृषि कार्य

में संलग्न है, परन्तु अधिकांश कृषि भूमि सवर्णों के पास ही है। ब्राह्मण वर्ग का अतिरिक्त व्यवसाय अध्ययन -अध्यापन तथा पौरोहित्य कार्य रहा हैं। यहाँ का परम्परागत् गढ़वाली समाज अपनी अधिकांश आवश्यकताओं के लिए स्थानीय संसाधनों पर निर्भर तथा स्वावलम्बी रहा है। अनूसूचित जाति वर्ग का मुख्य व्यवसाय आंशिक कृषि व पशुपालन, खेती हर मजदूरी के साथ-साथ निर्माण कार्य तथा कुछ विशिष्ट हस्तशिल्प व्यवसाय रहे है, जिसमें लोहार, दास, बढ़ई, मिस्त्री आदि प्रमुख है। स्वतंत्रता से पूर्व इन भागों में परम्परागत् अर्थव्यवस्था के नियमों व प्रतिबन्धों का प्रतिबद्धता से पालन किया जाता था, परन्तु स्वतंत्रता के बाद से ही इस परम्परागत् व्यवसायिक ढाँचे में ही निरन्तर नवीन परिवर्तन होते रहे है तथा कुछ विशेष व्यवसायों को छोड़कर अधिकांश व्यवसायों के सम्बन्ध में जातीय प्रतिबद्धता लगभग समाप्त हो चुकी है। यहाँ समग्र रूप से अध्ययन तथा अध्यापन जैसे ब्राह्मणवृत्ति परम्परागत व्यवसाय सभी सवर्णो द्वारा अपनाये जा रहे हैं, इसी प्रकार अनूसूचित जाति वर्ग के अनेक व्यवसाय जैसे बढ़ई गिरी, भवन निर्माण कार्य, मजदूरी, कपड़े सिलने का कार्य आदि सवर्णों द्वारा भी किये जा रहे है। अनुसूचित जाति वर्ग के परम्परागंत व्यवसायों में जूते बनाने, तॉबे के बर्तन बनाने, लोहार गिरि जैसे व्यवसाय अभी तक सवर्णो द्वारा नहीं अपनाये गये हैं। इन्हें केवल अनुसूचित जाति वर्ग के लोग ही करते हैं। इनके अतिरिक्त क्षेत्र में सभी नवविकसित व्यवसाय यथा व्यापार, परिवहन व्यवसाय विभिन्न प्रकार के निर्माण उद्योग तथा सभी तृतीयक व्यवसाय सभी वर्गों के लोगों द्वारा अपनाए गये हैं हालांकि इन नवीन व्यवसायों में सामाजिक प्रभुत्व व अच्छी आर्थिक स्थिति के अनुसार सवर्ण जातियों का ही बाहुल्य है। यहाँ तक कि अपनी आर्थिक मजबूरियों के कारण घरों व होटलों में नौकर, विभिन्न प्रकार के मजदूरी वाले कार्यो में सवर्ण लोग भी कार्यरत् है।

2.व्यावसायिक संरचना-क्षेत्र में परिवहन तथा संचार माध्यमों के विकास का सर्वाधिक प्रभाव क्षेत्र में विभिन्न गॉवों की व्यवसायिक संरचना में हो रहे निरन्तर नवीन परिवर्तन के रूप में देखा जा सकता है। परिवहन मार्गो एवं संचार साधनों के विकास के कारण सम्पूर्ण क्षेत्र में द्वितीयक तथा तृतीयक व्यवसायों का पर्याप्त विकास हुआ है जो मोटर मार्गों से जुड़े गॉवों में अधिक दिखाई देता है तथा सड़क मार्गों से दूरी की स्थिति में निरन्तर कम होता दिखाई देता है। क्षेत्र में कृषि व पशुपालन तथा अन्य प्राथमिक व्यवसायों में लगी कार्यकारी जनसंख्या का 86% भाग संलग्न है। जिसमें पुरूष कर्मकारों का 72.7 तथा महिलाओं का भाग 98.8 प्रतिशत हैं। मोटर मार्ग के समीप स्थित गॉवों में तथा मोटर मार्गो से दूर स्थित गॉवों की व्यवसायिक संरचना में इस औसत से अन्तर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अधिकांश तृतीयक सहायक व्यवसाय के रूप में अपनाए गये हैं तथा ये सभी व्यवसाय सड़क मार्गो पर स्थित स्थानों में अधिक दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए बद्रीनाथ, मार्ग पर पर स्थित गडोरा गॉव में प्राथमिक कार्यो में संलग्न जनसंख्या का प्रतिशत 60 है। गैर प्राथमिक पूर्णकालिक व्यवसायों में लगी जनसंख्या का प्रतिशत 11.78 है। जबकि कर्णप्रयाग-ग्वालदम मोटर मार्ग पर मींग गधेरा नामक स्थान मोटरमार्ग से 4 कि0मी0 दूरी पर स्थित हंसकोटी गॉव में यह प्रतिशत 81.84 तथा 12.98 प्रतिशत है, तथा क्षेत्र के सुदूरवर्ती गॉव में घाट से 22 कि0मी0 दूरी पर स्थित गाँव पैरी सूतोली में यह प्रतिशत 86.11 तथा 23.71 प्रतिशत है। क्षेत्र में विभिन्न सड़क मार्गीय स्थितियों वाली ग्रामीण बस्तियों के व्यवसायिक ढाँचे में परिवर्तन के सन्दर्भ में तथ्य स्पष्ट रूप से सभी भागों में समान रूप से लागू

होता दिखाई देता है, कि अधिक प्रचलित (वाहनों की संख्या के अनुसार) मोटर मार्गों तथा मोटर मार्गों के अन्तिम बिन्दुओं में स्थित स्थानों की व्यवसायिक संरचना अधिक परिवर्तित दिखाई दे रही है। जिसके कारण क्षेत्र के सभी अर्द्ध नगरीय स्वरूप वाले ग्रामीण बाजार व सेवा केन्द्र इन्हीं मार्गों पर थोडी-थोड़ी दूरी पर स्थित है।

सारंणी-1.आर्थिक व व्यवसायिक संरचना में परिवर्तन

प्रति चयनित गांव	मोटर-मार्ग से दूरी कि0मी0	गांवों में परिवारों की संख्या	गॉव की कुल जन संख्या	व्यवसायों में परिवर्तन वर्ष 1995-2011					आय में परिवर्तन 1995-2011	
				व्यापार	बढ़ई	मिस्त्री	लघु उद्योगों में कार्यरत व्यक्ति	सरकारी गैरसरकारी सेवाओं में कार्यरत	बैंक खातों की संख्याा	ऋणधारी व्यक्तियों की संख्या
गडोरा	राष्ट्रीय राजमार्ग/0 कि0मी0	116	509	18-38	2-3	14-19	16-14	166	68-97	42-55
बगोली	प्रान्तीय राजमार्ग 0 कि0मी0	94	515	12-26	1-4	2-5	8-8	98	58-85	19-37
हंस कोटी	प्रान्तीय राजमार्ग 6कि0मी0	76	385	1-6	2-1	13-19	1-5	49	38-45	18-27
घुनी	जिला सम्पर्क मार्ग 6 कि0 मी0	56	385	0-4	7-7	3-4	40-50	40	35-54	26-40
रासी	ग्रामीण सम्पर्क मार्ग 18 कि0मी0	63	342	8-13	7-10	17-22	42-42	57	42-75	8-12
पैरी	जनपदीय मार्ग 25 कि0मी0	54	417	0-3	1-2	6-6	28-30	36	23-45	6-15
क्यूजा	राष्ट्रीय राजमार्ग 4 कि0मी0	83	487	2-10	5-3	18-22	8-10	79	43-65	22-36
कुमेड़ा	जिला सम्पर्क मार्ग से 3 कि0मी0	56	376	2-17	2-2	2-3	3-3	39	46-60	8-15

(3) व्यवसायिक ढॉचे में विविधता–जैसा कि पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि क्षेत्र में परिवहन तथा संचार साधनों के विकास के फलस्वरूप हुए आधुनिकीकरण के प्रभाव से नवीन व्यवसायों का विकास हुआ है। तथा ग्रामीण रोजगार के नये क्षेत्रों का सृजन भी हुआ है। क्षेत्र के प्राथमिक व्यवसायों में कृषि व पशुपालन के साथ–साथ व्यवसाय के रूप में मत्स्य आखेट,उद्यानिकी, वन पदार्थों व जड़ी–बुटियों को इकट्ठा करना आदि व्यवसायों का क्षेत्र व्यापक हुआ है। घरेलू निर्माण कार्य व लघु उद्योगों में परम्परागत् हथकरघा, रिंगाल उद्योग, लकड़ी फर्नीचर उद्योग के अतिरिक्त मोटर वर्कशॉप, बेकरी, फर्नीचर जैसे उद्योग भी ग्रामीण क्षेत्र में स्थापित हुए है। क्षेत्र में तृतीय व्यवसाय वर्ग में अध्यापन, दुकानदारी, सेना में नौकरी व ठेकेदारी आदि व्यवसाय सीमित क्षेत्रों में तथा सीमित लोगों द्वारा ही किये जाते थे। क्षेत्र में इस व्यवसाय वर्ग में सर्वाधिक क्रान्तिकारी परिवर्तन दिखाई देता है। अब क्षेत्र के अन्दर ही कई तृतीयक व्यवसायों का विकास हुआ है। जिसमें स्थानीय निवासी बड़ी सख्यां में संलग्न है। क्षेत्र के सुदूर गॉवों के अतिरिक्त शेष सभी गॉवों में अधिकांश परिवारों का कोई न कोई सदस्य किसी न किसी व्यवसाय में संलग्न है जिसमें पूर्णकालिक रोजगार में लगे मनुष्यों कि संख्या के अनुसार क्रमशः सेना के नौकरी, अध्यापन, दुकानदारी, सरकारी, गैर सरकारी सेवा, परिवहन व्यवसाय, ठेकेदारी आदि का प्रमुख है।

(4) रोजगार हेतु पलायन में वृद्धि–चमोली एवं रूद्रप्रयाग जनपदों में देश के अन्य भागों की तरह ग्रामीण उत्प्रवास के दो रूप देखे जा सकते है। यहाँ भी ग्रामीण उत्प्रवास का मुख्य कारण आर्थिक है। उच्च हिमालय क्षेत्रों को छोड़कर सभी भागों में जनसंख्या भूमि के अनुपात में काफी कम है, पशुपालन हेतु चारागाहों की कमी हैं इसके साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अन्य अवसर भी नगण्य ही है। अतः यहाँ भी ग्रमीण क्षेत्रों से कार्यकारी जनसंख्या का प्रवास एक स्वभाविक प्रक्रिया हैं, स्वतंत्रता से पूर्व जबकि क्षेत्र में अधिकांश लोग, अशिक्षित थे तथा मोटर मार्गों का भी अभाव था तब गॉवों से गिने–चुने लोग वह भी तीर्थयात्रा मार्गों से रोजगार हेतु क्षेत्र से बाहर के स्थानों के लिए प्रवास करते थे। स्वतंत्रता से पूर्व इस तरह का प्रवास फौज में नौकरी, होटलों में नौकरी, व मजदूरी के लिए ही मुख्यतः हुआ करता था।

परिवहन मार्गों के विकास के साथ–साथ इस प्रवास में निरन्तर वृद्धि हुई तथा अब क्षेत्र के कई गॉवों के कई परिवार जो रोजगार हेतु क्षेत्र से बाहर गये थे, स्थायी रूप से बाहर ही बस चुके हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक गॉव से कुछ न कुछ सदस्य क्षेत्र से बाहर रह रहे है। यहाँ से रोजगार हेतु बाहर जाने वाले लोग मुख्यतः दिल्ली, गुड़गॉव, फरीदाबाद, लुधियाना, देहरादून, मेरठ, मुम्बई, अहमदाबाद तथा हिमाचल प्रदेश के विभिन्न स्थानों में कार्यरत है। क्षेत्र से वाह्य क्षेत्रों की ओर ग्रामीण उत्प्रवास की यह स्थिति अभी भी कायम हैं तथा इसमें निरन्तर वृद्धि हो रही है। 1960 के बाद क्षेत्र में परिवहन एवं संचार के साधनों का तीव्र विकास हुआ। जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्र में विभिन्न स्थानों में अनेक आर्थिक, व्यापारिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, प्रशासनिक व शैक्षणिक सुविधाओं का निरन्तर विकास हुआ। इससे ग्रामीण क्षेत्रों से अन्तर क्षेत्रीय उत्प्रवास तो रूका नहीं परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों के लोग विभिन्न प्रकार के रोजगार हेतु मोटर मार्गों के समीप स्थाई व अस्थाई रूप से प्रवास

कर विभिन्न व्यवसायों में संलग्न होते लगे हैं क्योंकि मोटर मार्गों पर स्थित स्थानों में व्यवसायों की विविधता तथा रोजगार के अवसर बढ़े हैं।

(5) भूमि उपयोग में परिवर्तन–अध्ययन क्षेत्र लघु हिमालय तथा उच्च हिमालय में स्थित पर्वतीय भू-भाग होने के कारण यहाँ बहुत कम भूमि मानवीय उपयोग में लाई जा सकी है तथा यहाँ कृषि भूमि भी कुल क्षेत्रफल का मात्र 9.6 प्रतिशत ही है जिसमें कृषि योग्य समतल भू-भाग अत्यन्त सीमित हैं तथा अधिकांश कृषि भूमि ढालू व असिंचित है। जिसे वेदिकाऐं बनाकर कृषि योग्य बनाया गया है। इस क्षेत्र में मानव निवास भी सीमित कृषि भूमि के मध्य स्थित होते हैं तथा सड़कों का निर्माण भी गाँवों को जोड़ते हुए किया गया है जिसके कारण सड़कों के विकास से गाँव की कृषि भूमि भी सड़कों के अन्तर्गत आ गयी है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों के विकास के परिणामस्वरूप मोटर मार्गो से जुड़े गावों का भुमि उपयोग प्रतिशत भी बदला है। चूंकि सड़कों के किनारे स्थित तथा मुख्य अधिवास के निकट भूमि का मूल्य अधिक होता है। अतः ऐसी भूमि का उपयोग लोग कृषि जैसे कम उत्पादक उपयोग की अपेक्षा दूसरों कार्यां में करना लाभप्रद समझते हैं। यहीं कारण है कि यहाँ ग्रामीण क्षेत्र में अधिकांश निर्माण कार्य तथा भूमि अनुरूप गैर कृषि उपयोग मुख्यतः मोटर मार्गों से संलग्न भागो में ही दिखाई देता है। मोटर मार्गों के निकट स्थित भूमि का उपयोग निर्मित क्षेत्र के अतिरिक्त सार्वजनिक कार्यां में किया गया है यहाँ तक कि अधिकाशं नवीन विकसित उद्यान भी मोटर मार्गों के निकट स्थित कृषि योग्य भूमि पर बनाये गये है।

कृषि में परिवर्तन–कृषि भूमि उपयोग के अतिरिक्त परिवहन तथा संचार मार्गों का प्रभाव उत्पादन, कृषि तकनीक, फसल चक्र तथा शास्य सम्मिश्रण पर भी दिखाई देता है। सर्वप्रथम क्षेत्र में लगातार बढ़ते आधुनिकीकरण का प्रभाव फसल प्रतिरूप पर देखा जा सकता है। क्षेत्र में पम्परागत् फसलों तथा उनके वरीयता क्रम में व्यापक परिवर्तन हुआ है, यह परिवर्तन हालांकि सम्पूर्ण क्षेत्र में दिखाई देता है, परन्तु सड़क मार्गों के निकट स्थित गाँवों में इस प्रकार का परिर्वतन अधिक देखने को मिलता है। गाँवों में मंडुवा, झंगोरा (सावा), दालें, राजमा, मक्की, जैसी फसलों का क्षेत्रफल घटा है। तथा उपयुक्त स्थानों पर व्यवसायिक फसलों प्याज, टमाटर,आलू, अदरक, लहसून, रामदाना आदि का प्रचलन बढ़ा है। मोटर मार्गों से जुड़े गाँवों में निरन्तर पलायन के कारण गाँवों की दूरी पर स्थित कृषि योग्य भूमि अथवा कम उपजाऊ कृषि योग्य भूमि बंजर भूमि में परिवर्तित होने लगी है क्योंकि ऐसे क्षेत्रों में लोग सीमित तथा निकट स्थित कृषि भूमि में परिवार के सदस्यों की क्षमता के अनुसार खेती करते है। सड़क मार्गों के निकट स्थित सिंचित भू-भागों पर कई स्थानों में व्यवसायिक स्तर पर साग-सब्जियों उगाई जा रही है। यहाँ पर नेपाली मजदूर गाँव वालों से भूमि किराये पर लेकर व्यवसाय करने लगे है। यद्यपि कृषि के ढंग, कृषि उपकरणों में कहीं भी कोई नवीन परिवर्तन नहीं दिखाई देता, परन्तु बड़े बाजार केन्द्र के निकट स्थित अधिकांशतः गाँवों में खेती के लिए रासायनिक खाद, उर्वरक, कीटनाशकों व नये बीजों का प्रयोग होने लगा है।

सारणी–2 कृषि व्यवसायों (क्षेत्र) में आधुनिकता का प्रभाव व परिवर्तन

कृषि फसलें व उपज	उत्पादन क्षेत्र
1. सन्तरा, नारंगी, खुमानी, आड़ू, प्लम, नास्पती, सेब	जोशीमठ, बडगॉव, पाणी ईराणी पोखरी, हापला, मोहनखाल, नौटी आदिबद्री, दिवालीखाल, रोहीणा घाट, घुनी, रामणी, सूतोल, कनोल, गोपेश्वर–मण्डल नारायणबगड़ बमियाला भगोती, असेड सिमली, थराली, तलवाड़ी, ग्वालम, देवाल, वाणमुन्दोली, कर्णप्रयाग किरसाल, नौटी, ऊखीमठ, मनसुना, सारी, मदमहेश्वर घाटी,फाटा सेरसी, अगस्तमुनी, चन्द्र नगर, गणेश नगर, दुर्गाधार, डाडाखाल, धनपुर जखोली, रणधार, बुरबा, हाट आदि सभी मध्यवर्ती ढ़ाल पर बागवानी अधिक है।
2. आलू, रामदाना, चुलाई, गेहत, भट्ट काली दाल, राजमा, सफेद/लाल राजमा	जोशीमठ, बडगाव, माणा नीति, रवि ग्राम, पोखरी, हापला, म्होन खाल थराली, देवाल, वाण, ग्वालदम, तलवाडी, सोल पट्टी, ल्वाणी, झीजोणी, बमियाला, असेड, सिमली, गैरसैणखेती, मालछी, ऊखीमठ, मनसुना ताला, फाटा त्रिजुगीनाराण, जखोली, रणधार, बागर, सारी, हाट, अगस्तमुनी, कोट, धनपुर ड़ाडा खाल
3.टमाटर प्याज लेहसुन अदरक जीरा जख्या सोयाबीन, सरसों, लाईयी,गेहूँ चावल	पोखरी, हापला, मोहन खाल, भणज, चन्दपुरी,चन्द्रनगर, नेणी, नौटी रेस चौपता, गुप्तकाशी, लवारा जखोली, रणधार बागर, घुनी,रामणी, खेती, मालसी, सिलपाटा, डाडाखाल कोट आदि।
5.जड़ी–बूटियां, कीड़ा जड़ी, कुटकी, बजरदन्ती, मिठा जड़ी, गणेश जड़ी, सालजम, पन्जा, हत्था	गुप्तकाशी, ताला, तुगनाथ, गोपेश्वर मण्डल, जोशीमठ, नीति माणा, मुन्दोली, वाण देवाल, सवार, रूदनाथ, घुनी रामणी, पाणाईराणी, सुतोल, कनोल आदि उच्च हिमालयी क्षेत्रों में आधिक मात्रा में जडी–बूटी का कार्य जिला भेषज संघ द्वारा ग्रामीण समूहों फार्म व नर्सरी बनाकर किया जाने लगा।
6.मत्यस्य पालन	बैरांगना, घिघराण,ग्वादम, कर्णप्रयाग, रूदप्रयाग, तलवाड़ी आदि
7.मौन पालन (एपी कल्चर)	तलवाडी,ग्वालदम, गोपेश्वर, सिमली, दिवालीखाल उखीमठ, ताला, मनसुना, रूद्रप्रयाग
8.रेशमकीट पालन (सेरी कल्चर)	मक्कु, उखीमठ, तलवाड़ी, ग्वालदम, जोशीमठ आदि
9. भेड़ पालन	जोशीमठ, पाणा, ईराणी, घाट, सुतोल कनोल, देवाल, वाण मुन्दौली, सवाण, मदमहेश्वर, गोडार, रांसी, केदारनाथ

पशुपालन

क्षेत्र में कृषि के साथ-साथ पशुपालन मुख्य सहायक व्यवसाय रहा हैं। स्वतंत्रता से पूर्व प्रत्येक ग्रामीण परिवार एक जोड़ी बैल, दो तीन गायें, दो तीन भैंसे, व कुछ भेड़-बकरियाँ आवश्यक रूप से रखता था परन्तु ग्रामीण क्षेत्रो के निकट विगत् वर्षों में हुए तीव्र वन कटाव तथा मोटर मार्गों के विकास के कारण जनसंख्या बढ़ने के साथ-साथ पशु संख्या स्थिर रही है, तथा प्रति परिवार पशु संख्या में भारी कमी आयी हैं। सड़क मार्गीय ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत कम परिवारों के पास अपने बैल होते है। सभी परिवार भैंस नही पालते तथा गिने-चुने परिवार के पास ही भेड़-बकरियाँ है, जबकि मोटर मार्गों से दूर स्थित गाँवों में यह परिवर्तन बहुत कम दिखाई देता है, व सभी गाँवों में पशुपालन व्यवसाय आय का मुख्य स्रोत माना जाता है। उच्च हिमालयी क्षेत्रों में भी पशु संख्या में कमी तथा पशुचारकों के स्थल के स्वरूप में तीव्र बदलाव दिखाई देता है। इन भागों में परम्परागत मौसमी प्रवास पशुचारण में तेजी से कमी आ रही है। मोटर मार्गों से संलग्न ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ द्वितीयक तथा तृतीयक व्यवसायों का थोड़ा बहुत प्रसार हुआ है। इनमें से कई परिवार दुग्ध पदार्थ भी बाजार से खरीदने लगे है, जबकि इन क्षेत्रों में आसपास के गाँवों से इन बाजार केन्द्रों तक दूध की आपूर्ति की जाती है। इन सभी क्षेत्रों में दूध तथा दूध निर्मित पदार्थों की प्रति सदस्य खपत पहले की अपेक्षा कम हुई है। इन भागों में बड़े बाजार केन्द्रों में डेरी फार्मिंग व्यवसाय भी विकसित हुआ। सड़क मार्गों के निकट स्थित कुछ गाँवों में सरकारी सुविधाओं का लाभ उठाकर कुछ लोगों ने मुर्गी पालन, खरगोश पालन, मत्स्य पालन आदि व्यवसाय प्रारम्भ किया है।

परम्परागत हस्तशिल्प कला का ह्रास

गढ़वाल हिमालय के चमोली व रूद्रप्रयाग में पहले कृषि उपकरण हल, कुदाल, खुरपी, कुल्हाडी, फावडा, आदि तैयार करने के लिए लोहार, काष्ठ उपकरणों के लिए बढ़ई, दरवाजे, खिड़की, सन्दूक, चारपाई, परोठे, कमोली, खोली, ताँबे के बर्तन (गागरी, बंठा, तौला, बारी) बनाने के लिए टमोटा, चमड़े के जूते-चप्पल बनाने वाले बढ़ई, कपड़े सिलने के लिए औजी, रिंगाल की वस्तुओं (टोकरियाँ, कण्डियाँ) बनाने वाले रूड़िया आदि शिल्पकार कहलाते थे। ये प्रायः अनुसूचित जाति के होते थे, भवन निर्माण हेतु राजमिस्त्री थे। लेकिन वर्तमान में परिवहन एवं संचार के विकास से परम्परागत् हस्तशिल्पों का ह्रास होता जा रहा है क्योंकि इन हस्तशिल्पों से निर्मित सामाग्री मंहगी होती है। साथ ही अधिक उपयोगी भी नहीं होती। मोटर मार्गों के विकास के फलस्वरूप क्षेत्र में विकसित ग्रामीण बाजारों में इस प्रकार की वस्तुऐं व इनके विकल्प कम कीमत पर आसानी से उपलब्ध हो जाते है। अतः यहाँ पर परम्परागत् हस्तशिल्प की वस्तुओं के निर्माण में भी भारी कमी आयी है। इसके साथ ही साक्षरता व रोजगार के नये अवसर मिले। आरक्षण नीति के कारण अनुसूचित जाति वर्ग के शिल्पी भी आज परम्परागत् व्यवसायों को छोड़कर नौकरी व दूसरे व्यवसायों कि ओर उन्मुख हुए है। इस प्रकार का परिवर्तन सड़क मार्गों की सुविधा वाले भागों में व्यापक रूप से दिखाई देता है। ग्रामीण क्षेत्रों में भवन निर्माण सम्बन्धी कार्य सुदूर स्थित भागों में स्थानीय मिस्त्रियों द्वारा ही किया जाता है। परन्तु मोटर मार्गो के निकट स्थित भागों में अधिकांश भवन निर्माण कार्य भी क्षेत्र में मैदानी क्षेत्रों के मिस्त्रियों द्वारा किया जाता रहा है।

स्थानीय उत्पादों का विपणन

जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि परिवहन एंव संचार साधनों के विकास से कृषि फसल प्रतिरूप में परिवर्तन तथा उद्यानिकी का पर्याप्त विकास हुआ है। क्षेत्र में मोटर मार्गो के विकास से पूर्व यहां की प्राथमिक अर्थव्यवस्था स्थान निर्वाह मूलक तथा स्वावलम्बी थी। वहीं अब व्यावसायिक होने लगी है। उच्च हिमालयी क्षेत्रों की जलवायु प्याज, टमाटर, लहसून, अदरख, आलू, राजमा, जैसे व्यावसायिक फसलों (नारंगी, सन्तरा, नींबू, नाशपाती, खुमानी, आडू, अमरूद) शीतोष्ण कटिबन्धीय फसलों के लिए उपयुक्त है। अतः इस क्षेत्र में सड़कों के विकास के साथ-साथ ये उत्पाद अब न केवल स्थानीय बाजारों में ही बेचे जाते है बल्कि राज्य के श्रृषिकेश, कोटद्वार, रामनगर जैसी मण्डियों के माध्यम से राज्य से बाहर भी भेजे जाने लगे है। इसके साथ ही कुछ स्थानीय परम्परागत् उत्पाद (उड़द, गहथ, काली, मंडुवा, सांवा) भी आस-पास के क्षेत्रों से एकत्र कर स्थानीय बाजारों के माध्यम से बेचे जाने लगे है। क्षेत्र के कई स्थानों में, परम्परागत कृषि बागवानी, पशुपालन से प्राप्त प्राथमिक उत्पादों के विक्रय केन्द्र तथा इनसे सम्बन्धित लघु उद्योगों की इकाईयाँ भी स्थापित हो चुकी है। इनमें ऊनी वस्त्र बनाना, फल संरक्षण, आटा व तेल चक्कियाँ, थ्रेसर मशीनें आदि प्रमुख ह। प्रत्येक विकासखण्ड में विपणन केन्द्र की स्थापना की गयी है। जहाँ ग्रामीण कृषक अपने उत्पादों को आसानी से बेच सकते है। परिवहन मार्गो के विकास के परिणामस्वरूप मुन्दोली में आलू, झूला तथा जोशीमठ में आलू, सेब, राजमा, थराली में आलू, दालें, ऊखीमठ में भी आलू, माल्टा, दालें गोपेश्वर-जोशीमठ तथा ग्वालदम में ऊनी वस्त्र की शॉल, दनें, थुलमें, आदि उत्पादों को स्थानीय बाजारों के माध्यम से वाह्य क्षेत्रों को भेजा जाने लगा है।

निष्कर्ष

उक्त सम्पूर्ण व्यवसायों में परिवहन एवं संचार माध्यमों के विकास से काफी मात्रा में परिवर्तन हुआ है जहाँ पहले लोग केवल परम्परागत कृषि कार्य ही किया करते थे वही आज आधुनिक ढ़ग से कृषि कार्य किया जाने लगा है क्षेत्र में लोग बागवानी, उद्यानीकरण करके बड़ी मात्रा में सब्जियों का उत्पादन करने के साथ-साथ परम्परागत कृषि के स्थान पर आधुनिक व व्यवसायिक कृषि कार्य करने लगे हैं जिसमें दालों, चूलाई, सोयाबीन, अदरक, प्यांज, लहसुन, धनिया, जीरा, जख्या आदि फसलों का उत्पादन व्यवसायिक रूप में किया जा रहा है पशुपालन के क्षेत्र में भी यहाँ पर अच्छे नस्ल के गाय, भैंस, बकरी, बैल आदि पशुओं को बाहरी क्षेत्रें से (डेनमार्क-गाय, आस्ट्रेलिया-मलेशिया-भेड़ व मैदानी क्षेत्रों से भी अच्छे नस्ल के पशु) खरीद कर उन से डेरी उद्योग चलाया जा रहा है व स्थानीय बाजारों में पशु उत्पादों का विक्रय किया जाने लगा है इसके साथ ही सहायक व्यवसाय के रूप में मत्स्य पालन, भेड़ पालन, मौन पालन, रेशम कीट पालन मुर्गी पालन आदि व्यवसाय किये जाने लगे है वर्तमान समय में क्षेत्र विशेष में परम्परागत व्यवसायों को छोड़ कर आधुनिक व्यवसायों में सर्वाधिक तृतीयक कार्यो में व्यापार, परिवहन व पर्यटन जैसे व्यवसायों में अधिक देखे जा सकते है जिससे क्षेत्र की अर्थव्यवस्था आर्थिक स्तर में भी वृद्धि आंकी गयी है परिवहन एवं संचार माध्यमों के विकास के कारण यहाँ पर सड़कों, पुलों व अन्य विकास कायों में युवा वर्ग स्वरोजगार के रूप में ठेकेदारी जैसे कार्यो में संलग्न होने लगे है इसके साथ-साथ व्यापार व पयर्टन व्यवसाय में टूर गाईड, यात्री विश्राम गृह व टूरिस्ट हट में भी, सेवा में कार्यरत है इसके अलावा दूरभाष व दूरसंचार में केबल आपरेटर, लाईनमैंन, फोरमैंन व

परिवहन कम्पनियों में ड्राईवर कडक्टर व मोटर वर्क शॉप आदि में अधिक मात्रा में रोजगार प्राप्त किये है। वर्तमान समय में यहाँ के व्यक्तियों का ध्यान कृषि कार्यों में न होकर विभिन्न प्रकार के सरकारी व गैरसरकारी सेवाओं की ओर अधिक बढ़ता जा रहा है। जिससे यहॉ की अर्थव्यस्था व व्यवसायिक स्वरूप में बड़ा परिवर्तन हुआ है। क्योंकि इस कारण यहाँ पर ढालू भूमि व खेतों का आकार छोटा होना, सीमांत कृषक कार्य द्वारा भरणपोषण हेतु खेती से मात्र 6 माह का खाद्यान्न उत्पादन होना, अर्थात कम उत्पादन का होना, यहाँ की भौगोलिक स्थिति भी इसके लिये उत्तरदायी है जिससे यहाँ का व्यक्ति तृतीयक व्यवसायों में अधिक मात्रा में संलग्न पाया जाता है जबकि पहले सम्पूर्ण व्यवसाय जाति वर्ग विशेष के आधार पर किये जाते थे।

गढ़वाल हिमालय के चमोली एवं रुद्रप्रयाग जनपद आर्थिक दृष्टि से पीछे हुये है। राज्य तथा क्षेत्र के पर्वतीय भागों की विषम भौगोलिक परिस्थितयां यहाँ के निवासियों के लिये रोजगार हेतु सीमित विविधता वाले अवसर प्रदान कर पाती है यद्यपि क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से पर्याप्त सम्पन्न हैं फिर भी आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि राज्य में आर्थिक पिछड़ेपन के साथ-साथ रोजगार के अवसर भी सीमित हैं। क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों की वर्तमान स्थिति क्षेत्र की जनंसख्या के भरण पोषण में पूर्णतः अक्षम सिद्ध हो रही है जिसके परिणाम स्वरूप उत्तराखण्ड गढ़वाल के पवर्तीय भागों से ग्रामीण जनंसख्या को रोजगार हेतु प्रति वर्ष बड़ी संख्या में देश के महानगरों व अन्य भागों की ओर पलायन पड़ रहा है इन ही प्रवासी लोगों द्वारा धन कमाकर बाह्य क्षेत्रों से अपने घर परिवार के लिए धनादेश के रूप में रूपये भेजे जाते हैं। जिससे यहां की आधी से अधिक जनंसख्या कि आजीविका चलती है इस प्रकार गढ़वाल हिमालय (उत्तराखण्ड) की लगभग आधी अर्थव्यस्था इसी धनादेश से चलती है जिसे यहाँ की आर्थिकी मनीआर्डरी कही जाती है।

सन्दर्भ सूची

1.हीरालाल, (1989): वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, पृष्ठ 220-226।

2 , Asstt. Director Disrict Statistics & Economics, 2011. Annual District Statistical Abstract, Garhwal Mandal, Pauri- Garhwal

3- District Statistics & Economics Office, 2011. Annual District Statistical Abstract, District Chamoli and RudraPrayag .

4.रतूडी, हरिकृष्ण(1995):गढ़वाल का इतिहास, भागीरथी, प्रकाशन, सुमन चौक, टिहरी गढ़वाल पृष्ठ 114-115

5.वाल्टर, एच0जी0 (1989): Gazzeteer of Himalaya; Dehradun, p. 70

6.अग्रवाल, एस0एस0 (1968): परिवहन के सिद्वान्त एवं समस्यायें, रस्तोगी प्रकाशन मेरठ, पृष्ठ 242

7. Teli, B.L. (2004), Land Degradation, Management and planning for sustainable Development in Hills. *Proc. International Symp. On Land Degradation: trends towards sustainable agriculture*.Voi.1,(edt.) T,P.Singh, Concept Pub. Comp. New Delhi pp.88-104.

8. Teli, B.L. (2004). Live stock Resources in Uttranchal : Structure, planning and potentials, *Proc. of Nation. Seminar on Central Himalaya : Environment potentials, action and challenges*. Pub, by Dept. of Geog. H.N.B. Garhwal Univ. Srinagar. pp.426-446.

9.Teli, B.L. (2005), Human Resources Development for Sustainable Development, *Proc. of National Conf. Dept. of Geog* Govt. college,Ajmer.pp35-39.

10.Teli, B.L.(1988). *Himalayan LandUse Structure Planning and Potentialities*. Monograph no. 7, Land Evaluation and Mapping, National Atlas and Thematic Mapping Organization, Calcutta, PP.55-60.

11.Teli, B.L. (1991). Ecology Farming System and Cropping Pattern-A case study of U.P. Himalaya in Himalayan Environment, Man and the Economic Activities. *Prof. A.B. Mukarji, Felicitation Volume*, Ed: By Raina, J.L., Pointer Pub. Jaipur, Part I, PP. 47-163.